❶ ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 45, अंक 38 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 जुलाई, 2022 से रविवार 24 जुलाई, 2022
विक्रमी सम्वत् 2079 सृष्टि सम्वत् 1960853123
दयानन्दाब्द : 199 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय स्वाधीनता के 75 वर्ष : आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर

अमर शहीदों की जयन्ती एवं बलिदान दिवस पर स्मरण करके प्रेरणा लेने और श्रद्धांजलि अर्पित करने का संकल्प ले युवा पीढ़ी

अमर शहीद पं. चन्द्रशेखर आजाद की 116वीं जयन्ती (23 जुलाई) पर विशेष स्मरण

आजादी का 75वां वर्ष अमृत महोत्सव के रूप में पूरे भारत देश में मनाया जा रहा है। सरकारी, गैर सरकारी और सार्वजनिक स्थानों पर आजादी के अमृत महोत्सव का प्रेरक लोगो दिखाई देता है। जैसे कि वह हम भारतीयों को जागृत कर रहा हो कि 75 वर्ष पहले 1947 में भारत माता परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त हुई थी। इसलिए उमंग, उत्साह और उल्लास से उत्सव मनाओ, यह भारत की आजादी का 75वीं वर्षगांठ है। यह अपने आप में हम सबके लिए एक महान उपलब्धि है। वस्तुत: आजादी से जीवन

- शेष पृष्ठ 3 पर

पण्डित चंद्रशेखर आजाद मूलत: आर्य समाज से प्रेरित महान वीरता, धीरता, शौर्य, पराक्रम के धनी साहसी वीर थे। कंधे पर यज्ञोपवीत, मूंछों पर ताव देते हुए हाथों की उंगलियां, कमर पर टंगी पिस्टल, जैसे वे संदेश दे रहे हों कि-

भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

अपने इन्हीं आदर्श भावों के कारण रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्लाह खान के बाद की क्रांतिकारी पीढ़ी के सबसे बड़े संगठनकर्ता नायक आजाद ही थे। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव सहित सभी क्रांतिकारियों की उम्र में कोई ज्यादा फर्क न होने के बावजूद आजाद की बहुत इज्जत करते थे। चंद्रशेखर 'आजाद' ने देशभर में अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया और अनेक अभियानों की योजना, निर्देशन और संचालन किया। पंडित रामप्रसाद बिस्मिल के काकोरी कांड से लेकर शहीद भगत सिंह के सांडर्स व संसद अभियान तक में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। काकोरी कांड, सांडर्स हत्याकांड व बटुकेश्वर दत्त और भगत सिंह का असेंबली बमकांड उनके कुछ प्रमुख अभियान रहे हैं।

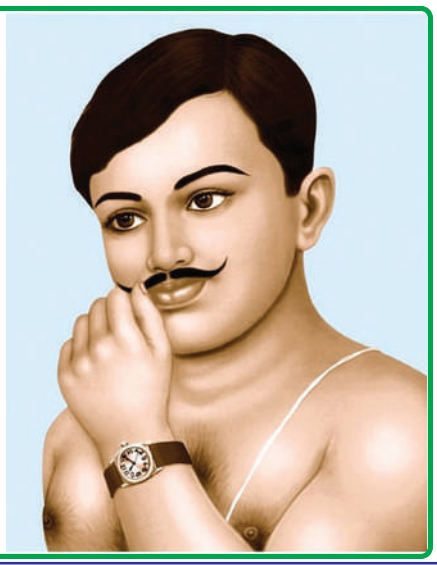

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का समस्त आर्यजनों, प्रान्तीय सभाओं, आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं को आह्वान

प्रत्येक नागरिक राष्ट्रीय ध्वज फहराकर मनाए आजादी की 75वीं वर्षगांठ - अमृत महोत्सव

आज़ादी का अमृत महोत्सव
हर घर तिरंगा
13-15 अगस्त 2022

- ★ 15 अगस्त 2022 को स्वाधीनता की 75 वीं वर्षगांठ आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में हर्षोल्लास से मनाएं।
- ★ प्रत्येक नागरिक स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त को अपने घरों, दुकानों, प्रतिष्ठानों, सोसायटियों, चौक-चौराहों पर ध्वजारोहण करें।
- ★ विश्व की प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर और आर्य विद्यालय, शिक्षण संस्थान, गुरुकुल स्वतन्त्रता दिवस पर राष्ट्रीय ध्वज अवश्य फहराएं।
- ★ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं अपने आर्यसमाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थानों को स्वतन्त्रता दिवस मनाने के लिए दिशा-निर्देश जारी करें।
- ★ भारत सरकार के अभियान हर-घर तिरंगा का प्रचार-प्रसार करें और 13 से 15 अगस्त तक अपने सभी परिचितों, मित्रों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों को भी अपने घर, दुकान, प्रतिष्ठान पर तिरंगा ध्वज लगाने के लिए प्रेरित करें।
- ★ अमर शहीदों के बलिदान की गौरव गाथाओं से युवाओं को परिचित कराएं।
- ★ देश की स्वतंत्रता में आर्य समाज का अभूतपूर्व योगदान विषय पर गोष्ठी का आयोजन करें।
- ★ देश भक्ति के भजन, संगीत की विशेष प्रस्तुतियों का आयोजन करें।

विभिन्न विचारधाराओं के टकराव से भारत में घटित वर्तमान घटनाओं के सन्दर्भ में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

प्रमुख आर्य संगठनों के अधिकारियों की विशेष विचार गोष्ठी

-: दिनांक :-
24 जुलाई, 2022 (रविवार)

-: समय :-
सायं 3:00 से 7:00 बजे

-: स्थान :-
आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, प्रान्तीय आर्य महिला सभा, समस्त वेद प्रचार मंडलों, समस्त आर्यसमाजों, महिला आर्यसमाज, आर्य वीर दल, आर्य वीरांगना दल एवं समस्त आर्य संगठनों के अधिकारियों, कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं प्रमुख सदस्यों से अनुरोध है कि अधिकाधिक संख्या में समय से पूर्व पधारकर इस चिन्तन सत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें और संगठन के कार्यों और गतिविधियों को राष्ट्रव्यापी बनाने में अपना सहयोग प्रदान करके गोष्ठी को सफल बनाने में सहयोग करें।

निवेदक :-

धर्मपाल आर्य, प्रधान — विद्यामित्र ठुकराल, कोषाध्यक्ष — विनय आर्य, महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सुरेन्द्र कुमार रैली, का. प्रधान — आर्य सतीश चड्ढा, महामन्त्री — अरुण प्रकाश वर्मा, कोषाध्यक्ष
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

समस्त वेद प्रचार मंडल दिल्ली ★ प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली ★ आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश ★ आर्य वीरांगना दल दिल्ली

देववाणी-संस्कृत

शुभ संकल्प ही आएं

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सद्यद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।। ऋ. 1/89/1
ऋषि : गोतमो राहूगणो पुत्रः।। देवता - **विश्वेदेवाः।।** छन्दः **निचृज्जगती।।**

शब्दार्थ - नः भद्राः क्रतवः विश्वतः आयन्तु = हमारे पास श्रेष्ठ ही सङ्कल्प सब ओर से आएं। **अदब्धासः** = जो कभी न दबनेवाले हों **अपरीतासः** = जो किसी से घिरे हुए न हों उद्भिदः और जो उद्भेदन करने वाले हों **यथा देवाः न सदमिद् वृधे असन्** = जिससे कि देवता हमारे लिए सदा उन्नति के लिए होवें **दिवे दिवे अप्रायुवो रक्षितारश्च असन्** = और प्रतिदिन प्रमाद रहित होकर हमारे रक्षक होवें।

विनय - ''मनुष्य क्रतुमय (सङ्कल्पमय) है, अतः मनुष्य को क्रतु अर्थात् सङ्कल्प व अध्यवसाय करना चाहिए'', परन्तु यह सङ्कल्प हम किस प्रकार से करें?

पहले तो हमारे क्रतु (सङ्कल्प) 'भद्राः' होने चाहिए। हम श्रेष्ठ सङ्कल्प ही करें सद्यिद् कल्याणकारी सङ्कल्प ही करें। जो अभद्र सङ्कल्प हैं उन्हें देवता स्वीकृत नहीं करते, अतएव उनसे कुछ बनता नहीं। इसलिए हमारा यह आग्रह है कि हमारे पास शुभ सङ्कल्प ही आवें जिससे देवता अर्थात् संसार को चलाने वाली ईश्वरीय शक्तियां हमें उन्नत करती रहें, परन्तु सङ्कल्पों के केवल शुभ होने से ही काम नहीं चलेगा, ये हमारे शुभ सङ्कल्प बलवान् भी होने चाहिए। ये 'अदब्ध' हों, किसी विरोधी शक्ति से दबनेवाले न हों और फिर ये सङ्कल्प उदभेदन करने वाले हों, अर्थात् मार्ग की सब विघ्न-बाधाओं का उदभेदन करते हुए, सब गुत्थियों को सुलझाते हुए और सब बन्द किवाड़ों को खोलते हुए सफलता तक पहुंचाने वाले हों। हमारे शुभ सङ्कल्पों में ऐसा बल भी चाहिए और ये सङ्कल्प (परीत) पहले से घिरे हुए भी, अर्थात् किसी बड़ी अच्छाई के विरोधी भी नहीं होने चाहिएं, हमारे सङ्कल्प किसी भी महान् सिद्धान्त में हस्तक्षेप करने वाले भी नहीं होने चाहिए। यदि ऐसा होगा, तो भी हमारे सङ्कल्प जगत् के देवों द्वारा प्रतिहत हो जाएंगे, मारे जाएंगे। इसलिए आज से हममें शुभ और ऐसे बलवान् सङ्कल्प ही आवें जिससे कि (इन सङ्कल्पों के ईश्वरीय नियमों के अनुकूल होने के कारण) देवता हमारी सदा उन्नति कराते जाएं और दिन-रात अप्रमाद होकर हमारे रक्षक बने रहें। प्रभु के ये देव तो हमारी उन्नति के लिए ही हैं और निरन्तर बिना भूल-चूक के हमारी रक्षा करने को तैयार हैं, पर हम भी बड़े-बड़े अभद्र सङ्कल्प करके या यूं ही निर्बल-से बहुत-से सङ्कल्प करके ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देते हैं कि इन देवों की बड़ी भारी सहायता पाने से अपने-आपको वञ्चित कर लेते हैं। इसलिए आज से केवल भद्र निश्चय ही हममे आवें तथा न दबनेवाले, उद्भेदन करते हुए चले जाने वाले ओर अपरीत, महान् भद्र निश्चय ही हममें आवें और चारों ओर से आवें, जिससे कि हम जगत् शासक के देवताओं की अनुकूलता में ही सदा बढ़ते हुए जीवनमार्ग पर चलते जाएं।

वेद-स्वाध्याय

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पूर्व राष्ट्रपति हामिद अंसारी को लेकर पाकिस्तानी पत्रकार के बयान - क्या, क्यों, कैसे?

हामिद अंसारी की देशभक्ति पर खुफिया तन्त्र के सवाल

अभी हाल ही में एक पाकिस्तानी यूट्यूबर शकील चौधरी को दिए अपने इन्टरव्यू में पाकिस्तानी पत्रकार नुसरत मिर्जा ने हैरतअंगेज़ दावा किया है। उसने बताया है कि, वह 2005 से 2011 के बीच कांग्रेस नीत गठबंधन यूपीए सरकार के शासनकाल में कई बार भारत आए और सूचनाएं एकत्रित कर पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. तक पहुंचाई। सिर्फ इतना ही नहीं पाक पत्रकार मिर्जा ने 2010 के दौरे के बारे दावा किया कि उस दौरान 56 मुस्लिम सांसद थे भारत में, जो उनके दोस्त हैं और बहुत मददगार रहे, यही नहीं बल्कि तत्कालीन भारतीय उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने आतंकवाद पर हुए एक सेमिनार में उसे आमंत्रित किया किया था।

पाकिस्तानी पत्रकार नुसरत मिर्जा के इस बयान के बाद भारतीय राजनीति ने भूचाल मच गया और हमेशा की तरह एक बार फिर भारतीय खुफियां एजेंसी रॉ के एक पूर्व अधिकारी रहे आर. के. यादव ने ट्वीट किया और बताया कि हामिद अंसारी की भूमिका की जाँच होनी चाहिए। इससे पहले भी 28 जून 2019 को एक पूर्व रॉ अधिकारी एन. के. सूद नाम के ट्विटर हेंडल से अंसारी की भूमिका को लेकर एक ट्वीट किया गया था।

असल में कुछ सालों पहले भारतीय खुफियां एजेंसी रॉ के एक पूर्व अधिकारी रहे आर.के. यादव की एक किताब मिशन रॉ प्रकाशित हुई थी। किताब में 90 के दशक से जुडी कुछ घटनाओं का हवाला दिया गया है। किताब में लिखा है कि 90 का दशक था ईरान की राजधानी तेहरान में ईरानी खुफिया एजेंसी ने संदीप कपूर नाम के रॉ के एक कर्मचारी को अगवा कर लिया। उसे कहां ले जाया गया, इस बारे में भारतीय राजदूत हामिद अंसारी ने जानकारी नहीं दी। तीन दिनों तक ईरानी एजेंसी ने कपूर को अमानवीय यातनाएं दीं और फिर मरने के लिए एक खाली जगह पर फेंक दिया गया। इससे भारतीय दूतावास के कर्मचारी बेहद नाराज थे।

इसी दौरान एक और रॉ जासूस को अगवा कर लिया गया, जिनका नाम डी.बी. माथुर था। वह भी दो दिन तक गायब रहा लेकिन हामिद अंसारी चुप थे। भारतीय राजदूत अंसारी की इस चुप्पी और रहस्यमय रवैये से दूतावास के कर्मचारियों का सब्र जवाब दे गया। माथुर की पत्नी और दूतावास के बाकी स्टाफ की पत्नियों ने भारतीय राजदूत से मिलने का समय मांगा, लेकिन उन्होंने मिलने तक से इनकार कर दिया। इसके बाद 30 महिलाओं के समूह ने अपने ही राजदूत अंसारी के कमरे पर धावा बोल दिया और उनका घेराव किया। घेराव ही नहीं बल्कि पति के अपहरण से दुखी डी.बी. माथुर की पत्नी जबरदस्ती दरवाजा खोलकर अपने ही राजदूत के कमरे में घुस गई थीं। वह सिर्फ इतनी मांग कर रही थीं कि भारतीय राजदूत अंसारी इन घटनाओं पर ईरानी अधिकारियों से विरोध दर्ज करवाएं।

भारतीय राजदूत अंसारी का ये रवैया देखकर ईरान में सक्रिय रॉ के दूसरे लोगों ने दिल्ली में हेडक्वार्टर कॉल की। इसके अलावा रॉ के एक जासूस ने उन दिनों विपक्ष के नेता रहे अटल बिहारी वाजपेयी जी से संपर्क किया। उस दौरान विपक्ष के नेता रहे अटल बिहारी बाजपेई, तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव से मिले। ईरान में रॉ के अधिकारीयों की गिरफ्तारी और हत्या पर सवाल किये। भारतीय विदेश मंत्रालय

.....हालाँकि किताब के अलावा भी हामिद अंसारी की भूमिका पर समय-समय सवाल उठते रहे है। दिल्ली दंगे और तमाम ऐसी साजिशों में शामिल एक अलगाववादी संगठन पीएफआई का जलसा 2017 में हुआ। तब उप राष्ट्रपति के तौर पर हामिद अंसारी ने इसमें शिरकत की। जबकि पीएफआई का असली रूप तमाम देश विरोधी गतिविधियों, जिहाद, कन्वर्जन और लव जिहाद के आरोप सामने आ रहे थे। पर अंसारी जी उसमें गए। जब हंगामा हुआ, तो बोले कि मैं तो वहां सरकारी मेहमान की तरह गया था। यही नहीं 21 जून, 2015 को पूरी दुनिया में पहला योग दिवस मनाया गया। देश के प्रधानमंत्री से लेकर तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी तक राजपथ के कार्यक्रम में शामिल हुए। पर हमेशा की तरह अंसारी साहब राष्ट्रीय अवसर पर नदारद थे। उनके आवास तक पर कोई कार्यक्रम नहीं हुआ। यही नहीं साल 2015 का गणतंत्र दिवस था। अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा मुख्य अतिथि थे। लेकिन अंसारी ने अपना असली रंग दिखाया। तिरंगे को सैल्यूट नहीं किया। जब सवाल उठा, तो फिर बहाना। इस बार बहाना प्रोटोकाल का बनाया गया। इसके अलावा जब मद्रास हाईकोर्ट का फैसला वंदे मातरम को लेकर आया तो हामिद अंसारी का कहना था मैं इसे असुरक्षा की भावना कहूंगा। .....

हरकत में आया यानि इसके बाद मामला सीधा नई दिल्ली के हाथ में आ गया। विदेश मंत्रालय की दखल से कुछ घंटों के अंदर ही माथुर को छोड़ दिया गया। पता चला कि दो दिन से उसे भी थर्ड डिग्री टॉर्चर किया जा रहा था। भारतीय दूतावास के इस रवैये ने ईरान में भारतीय खुफिया एजेंट्स को बुरी तरह से हिलाकर रख दिया था। नई दिल्ली के हस्तक्षेप से डी.बी. माथुर की रिहाई सम्भव हो सकी थी। लेकिन इसके बाद तत्कालीन भारतीय राजदूत अंसारी ने ईरान में रॉ का दफ़्तर ही बन्द कर देने का सुझाव नई दिल्ली भेजा था।

असल में हामिद अंसारी साहब भारतीय विदेश सेवा आईएफएस के अधिकारी थे और इस हैसियत से वह ईरान के अलावा सऊदी अरब और कई दूसरे खाड़ी के देशों में भारतीय राजदूत रहे। लेकिन ईरान में हुई इन घटनाओं ने हामिद अंसारी की निष्ठा पर सवाल खड़े कर दिए, ईरान में रॉ के जासूस खास तौर पर इसलिए भेजे जाते हैं ताकि वो वहां पर रहकर पाकिस्तान की गतिविधियों पर नजर रख सकें।

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रथम पृष्ठ का शेष

जीना मनुष्य का अधिकार भी है और स्वभाव भी है। प्रतिदिन हम (ब्रह्मयज्ञ) संध्या में ईश्वर से प्रार्थना भी करते हैं - **'अदीना स्याम शरदः शतं'** अर्थात् हे प्रभु, हम सौ वर्षों तक स्वाधीन होकर जीवन जिएं। क्योंकि पराधीनता मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा दु:ख माना गया है। पर यहां पर देश की आजादी की 75वीं वर्षगांठ की बात चल रही है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने ही आजादी का प्रथम उदघोष किया था, उन्होंने अपने क्रांतिकारी भाषणों के माध्यम से युवाओं में राष्ट्र प्रेम का भाव जागृत किया था, स्वदेशी और विदेशी राजा का भेद बताते हुए उन्होंने कहा था कि विदेशी राजा चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो लेकिन वह स्वदेशी राजा के समान हितकारी नहीं हो सकता। महर्षि की प्रेरणा से और अमर शहीद बलिदानियों के त्याग, तपस्या और सर्वस्व न्यौछावर करने से हम आजाद तो हो गये, आजादी का अमृत महोत्सव भी मना रहे हैं।

किन्तु इसके साथ यह अमृत महोत्सव, यह आजादी का प्रमुख त्योहार हमें और भी बहुत कुछ कहता है, अगर उस पर गहराई से विचार किया जाए तो समझ आता है कि भारत की यह आजादी जिसका हम उत्सव मना रहे हैं, वह हमें यूं ही नहीं मिल गई थी, बल्कि इसके लिए हमारे पूर्वजों ने, अमर शहीद वीर बलिदानियों ने हंसते-हंसते आजादी के महायज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी थी। अपने रक्त की बूंदों से यज्ञ वेदी का अभिसिंचन किया था। अनेक माता-पिताओं ने अपने बच्चों के बलिदानों पर गौरव मनाया था। बहनों ने अपने भाइयों की शहादत पर रोते बिलखते हुए सराहना की थी, अमर वीर बलिदानियों की अर्धांगिनियों ने अपने सुहाग को खोकर भी स्वयं को सौभाग्य शाली समझा था, इस तरह देश की आजादी की बहुत बड़ी कीमत हमने अदा की थी, देश को आजादी मिली, लेकिन देश की वर्तमान पीढ़ी क्या उस आजादी का महत्व समझ रही है? क्या हम अपने देश के सम्मान और स्वाभिमान के प्रति सजग हैं? क्या हम अपने अमर शहीदों के बलिदान को स्मरण करते हैं? उनसे प्रेरणा लेकर अपने राष्ट्र से प्रेम करते हैं? क्या कभी हम अपने देश की उन्नति-प्रगति के लिए को योगदान देते हैं? देश के प्रति हमारा कर्तव्य क्या है? हम क्या कुछ कर सकते हैं? क्या कभी हमारे मन में ऐसे विचार जन्मते हैं? क्या कभी हम सोचते हैं कि हमारे शहीदों का जन्मदिन कब आता है और शहीदों का बलिदान दिवस कब आता है। उन रणवीरों की जन्म जयंती और बलिदान दिवस पर क्या हम उन्हें स्मरण करते हैं? क्या हम उनसे प्रेरणा लेते हैं? आजादी के इस अमृत महोत्सव वर्ष से आइए, हम संकल्प लें कि अपने अमर शहीदों, महापुरुषों का जन्मदिन और बलिदान दिवस उनसे प्रेरणा लेकर तथा विनम्र श्रद्धांजलि देकर मनाएंगे।

23 जुलाई 1906 को श्रीमती जगरानी देवी व पंडित सीताराम तिवारी के यहां भाबरा (झाबुआ, मध्यप्रदेश) में महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर 'आजाद' का जन्म हुआ था। वे पंडित रामप्रसाद 'बिस्मिल' की हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) में थे और उनकी मृत्यु के बाद नवनिर्मित हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी एसोसिएशन (HSRA) के प्रमुख चुने गए थे।

15 वर्ष की किशोर अवस्था में उन्हें बनारस में संस्कृत कॉलेज के बाहर धरना देते हुए पुलिस ने गिरफ्तार कर ज्वॉइंट मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया। तब मजिस्ट्रेट ने उनसे उनका नाम पूछा, तो उन्होंने जवाब दिया- 'आजाद'। मजिस्ट्रेट ने पिता का नाम पूछा, तो उन्होंने जवाब दिया- स्वाधीनता। मजिस्ट्रेट ने तीसरी बार घर का पता पूछा, तो उन्होंने जवाब दिया- जेल। निर्भीक स्वर में उनके जवाब सुनने के बाद मजिस्ट्रेट ने उन्हें 15 कोड़े लगाने की सजा दी। हर बार जब उनकी पीठ पर कोड़ा लगाया जाता, तो वे 'भारत माता की जय' बोलते। थोड़ी ही देर में उनकी पूरी पीठ लहूलुहान हो गई। उस दिन से उनके नाम के साथ 'आजाद' जुड़ गया।

पंडित चंद्रशेखर आजाद मूलत: आर्य समाज से प्रेरित महान वीरता, धीरता, शौर्य, पराक्रम के धनी साहसी वीर थे। गले में यज्ञोपवीत, मूंछों पर ताव देते हुए हाथों की उंगलियां, कमर पर टंगी पिस्टल, जैसे वे संदेश दे रहे हों कि -

भरा नहीं जो भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं।
हृदय नहीं वह पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

अपने इन्हीं आदर्श भावों के कारण रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्लाह खान के बाद की क्रांतिकारी पीढ़ी के सबसे बड़े संगठनकर्ता नायक आजाद ही थे। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव सहित सभी क्रांतिकारियों की उम्र में कोई ज्यादा फर्क न होने के बावजूद आजाद की बहुत इज्जत करते थे। अंग्रेजी हुकूमत ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक 'साइमन कमीशन' आयोग बनाया तो पूरे भारत में साइमन कमीशन का जोरदार विरोध हुआ और स्थान-स्थान पर उसे काले झंडे दिखाए गए। चंद्रशेखर 'आजाद' ने देशभर में अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया और अनेक अभियानों का प्लान, निर्देशन और संचालन किया। पंडित रामप्रसाद बिस्मिल के काकोरी कांड से लेकर शहीद भगत सिंह के सांडर्स व संसद अभियान तक में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। काकोरी कांड, सांडर्स हत्याकांड व बटुकेश्वर दत्त और भगत सिंह का असेंबली बमकांड उनके कुछ प्रमुख अभियान रहे हैं।

देशप्रेम, वीरता और साहस की एक ऐसी ही मिसाल थे शहीद क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद। 25 साल की उम्र में भारतमाता के लिए शहीद होने वाले आजाद के विषय में लिखने को तो बहुत कुछ लिखा जा सकता है। लेकिन संक्षेप में कहें तो उन्होंने अपनी देशभक्ति, देश प्रेम और समर्पण के साथ पराक्रम से अंग्रेजों के अंदर इतना खौफ पैदा कर दिया था कि उनकी मौत के बाद भी अंग्रेज उनके मृत शरीर को आधे घंटे तक सिर्फ देखते रहे थे। उन्हें डर था कि अगर वे पास गए तो कहीं चंद्रशेखर आजाद उन्हें मार ना डालें।

एक बार भगतसिह ने बातचीत करते हुए चंद्रशेखर आजाद से कहा, 'पंडितजी, हम क्रांतिकारियों के जीवन-मरण का कोई ठिकाना नहीं, अत: आप अपने घर का पता दे दें ताकि यदि आपको कुछ हो जाए तो आपके परिवार की कुछ सहायता की जा सके।' चंद्रशेखर सकते में आ गए और कहने लगे, 'पार्टी का कार्यकर्ता मैं हूं, मेरा परिवार नहीं। उनसे तुम्हें क्या मतलब? दूसरी बात, उन्हें तुम्हारी मदद की जरूरत नहीं है और न ही मुझे जीवनी लिखवानी है। हम लोग नि:स्वार्थ भाव से देश की सेवा में जुटे हैं, इसके एवज में न धन चाहिए और न ही ख्याति।' 27 फरवरी 1931 को जब वे अपने साथी सरदार भगतसिह की जान बचाने के लिए आनंद भवन में नेहरूजी से मुलाकात करके निकले, तब पुलिस ने उन्हें चंद्रशेखर आजाद पार्क (तब अल्फ्रैड पार्क) में घेर लिया। बहुत देर तक आजाद ने जमकर अकेले ही मुकाबला किया। उन्होंने अपने साथी सुखदेव राजगुरु को पहले ही भगा दिया था।

आखिर पुलिस की कई गोलियां आजाद के शरीर में समा गईं। उनके माउजर में केवल एक आखिरी गोली बची थी। उन्होंने सोचा कि यदि मैं यह गोली भी चला दूंगा तो जीवित गिरफ्तार होने का भय है। अपनी कनपटी से माउजर की नली लगाकर उन्होंने आखिरी गोली स्वयं पर ही चला दी। गोली घातक सिद्ध हुई और उनका प्राणांत हो गया। पुलिस पर अपनी पिस्तौल से गोलियां चलाकर 'आजाद' ने पहले अपने साथी सुखदेव राज को वहां से सुरक्षित हटाया और अंत में एक गोली बचने पर अपनी कनपटी पर दाग ली और 'आजाद' नाम सार्थक किया।

23 जुलाई 2022 को अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद को 116वीं जयंती है और इसके 21 दिन बाद 15 अगस्त 2022 को पुण्यमय भारत देश अपनी आजादी की 75वीं वर्षगांठ अमृत महोत्सव के रूप में भव्य, दिव्य और विराट, विशाल स्तर पर मनाएगा। इस अवसर पर आर्य समाज देश की युवा पीढ़ी से आह्वान करता है कि आओ अपने अमर शहीद बलिदानियों के जन्म, जीवन और बलिदान से प्रेरणा लेकर राष्ट्र सेवा का संकल्प ले, और हमेशा उन्हें अपना आदर्श मानते हुए जीवन पथ पर आगे बढ़े।

- आचार्य अनिल शास्त्री

स्वास्थ्य रक्षा

उत्तम स्वास्थ्य के सूत्र एवं रोगों से बचाव

आर्य सन्देश के इस अंक में स्वास्थ्य रक्षा स्तंभ में हम आपको बता रहे हैं कुछ वे उपयोगी प्रचीन नुस्खे जिनको अपनाकर आप जटिल बीमारियों से स्वयं को ओर अपने परिवार स्वस्थ रख सकते हैं। लेकिन हम यहां पर यह अवश्य स्पस्ट करना चाहते हैं कि ये पुराने वैद्यों द्वारा प्रचलित घरेलू नुस्खे हैं, अत: अगर किसी को कोई खतरनाक बीमारी हो तो कृपया अपने चिकित्सक का परामर्श और उपचार ही प्रयोग में लाएं और स्वस्थ रहें। - सम्पादक

गतांक से आगे

यकृत एवं पित्ताशय की पथरी
(Gall Bladder Stone)

बादाम छ: नग, मुनक्का छ: नग, मगज खरबूजा 4 ग्राम, छोटी इलायची 2 नग, मिश्री 10ग्राम, पांचों को ठंडाई की तरह बारीक घोटकर आधे कप पानी में मिलाकर छालकर पीवें, चमत्कारी लाभ होगा। अमरूद 4 पत्ते का काढ़ा सुबह लेवें, त्रिफला चूर्ण 1 चम्मच गर्म पानी के साथ सोते समय।

मुद्रा-अपानवायु मुद्रा 15 से 20 मिनट। 50ग्राम कुल्थीदाल का सेवन करें। गर्म पानी पीवें।

पित्ताशय पथरी दर्द- चावल, पालक, दूध के सामान, चूना, टमाटर, आम आदि कैल्शियम वाले पदार्थ न लेवें।

पिसी सोंठ 100ग्राम + 1 ग्राम कालानमक गर्म जल में लेने से आराम मिलता है। गाजर रस 100ग्राम पिलावें, मूली रस पिलावें।

पथरी- 1. गेंदे के पत्ते का रस या 10ग्राम काढ़ा सुबह-शाम एक माह तक लेवें।

2. मूली पत्ते का रस 40ग्राम सुबह खाली पेट लेवें।

3. नीम की छ: छ: पत्ति 50ग्राम पानी में पीसकर खाली पेट लेवें, सुबह-शाम।

4. नीम की सूखी पत्तियों का राख बनाकर 20ग्राम राख का सेवन कों 3-4 दिन तक।

विशेष- कुल्थीदाल 50ग्राम 1 लिटर पानी में भिगा दें सुबह धीमी-धीमी आग में लगभग 4 घण्टे पकायें, 250ग्राम पानी शेष रहने पर देसी घीं का छोंक लगायें। छोंक में सैंधा नमक, कालीमिर्च, जीरा, हल्दी डालें। 1-2 माह तक दोपहर में।

5. पत्थर चट्टा 3 पत्ते खाली पेट चबाएं, तथा प्याज का रस 20 मि.लि. ताजा रस दिन में तीन बार 90 दिनों तक लेवें।

6. अमरूद के 5 पत्ते शाम को खावें + काढ़ा बनाकर लें।

7. 30ग्राम गेंदे पत्ते का काढ़ा बनाकर सुबह-शाम 1 माह तक सेवन करें।

निषेध- पालक, टमाटर, बैंगन, चॉवल, उडद, सूखे मेवे, चाय, चीनी, नमकीन, मैदा, मांस, अण्डा।

पथ्य- कुल्थीदाल, मूली, आंवला, जौ, मूंग, 6-8 गिलास पानी पिवें, आंवला, लौकी, करेला। ***- शेष अगले अंक में***

पंजाब केसरी की अध्यक्षा श्रीमती किरण चोपड़ा जी के 68वें जन्मदिवस पर आर्यसमाज ने दी शुभकामनाएं

भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कारों की रक्षा में हमारा परिवार समर्पित है - श्रीमती किरण चोपड़ा

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली सभा एवं आर्यसमाज के अधिकारियों ने की शिष्टाचार भेंट

संसार में सारी श्रेष्ठ विद्याएं वेदों से प्रकाशित हुई हैं। आर्य समाज सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण में समर्पित रहा। वेद ज्ञान, यज्ञ की ज्योति घर-घर फैलाएं। यह सुविचार आचार्य सुखदेव तपस्वी ने पंजाब केसरी की डायरेक्टर एवं वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब की चेयरपर्सन श्रीमती किरण चोपड़ा के 68वें जन्मोत्सव पर वजीरपुर, नई दिल्ली में कहे।

जन्म दिवस के उपलक्ष्य में वैदिक विद्वान ठाकुर विक्रम सिंह, वेद प्रवक्ता पं. शिव नारायण शास्त्री, आचार्य चन्द्रमोहन आर्य, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली के महामंत्री सतीश चड्ढा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री कृपाल सिह आर्य, सुरेंद्र चौधरी, दयानंद सेवाश्रम संघ के कोषाध्यक्ष नीरज आर्य, तिलक नगर से आर्य नेता यशपाल आर्य, मनोज अरोड़ा, लाल सिंह, धन सिंह ने वैदिक मंत्रों का पाठ करके श्रीमती किरण चोपड़ा को दीर्घ एवं यशस्वी जीवन की मंगल कामनाएं की। इस मौके पर आर्य संस्थाओं की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री सतीश चड्ढा ने यज्ञ कुंड व स्मृति चिन्ह तथा वैदिक साहित्य श्रीमती किरण चोपड़ा को भेंट किया। वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब की चेयरपर्सन श्रीमती किरण चोपड़ा ने कहा कि भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कारों की रक्षा में हमारा परिवार सदा समर्पित रहा है। हमारे पूर्वज व साहसी पति श्री अश्विनी कुमार चोपड़ा समाज सुधार के कार्यों व अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, रोहिणी में सहयोगी रहे। घर व पर्यावरण शुद्धि के यज्ञ का विशेष महत्व है, जिसे हम समय-समय पर आयोजित करते रहते हैं। परिवार में मेरी तथा बच्चों की शादी परंपरागत सादगी वैदिक रीति से हुई, उन्होंने आर्य प्रतिनिधियों को निर्भीक संपादक स्व. श्री अश्विनी चोपड़ा की आत्मकथा "इट इज माई लाइफ" की पुस्तकें भेंट स्वरूप दी।

ठाकुर विक्रम सिंह एवं चन्द्रमोहन ने इस अवसर पर लाला जगत नारायण, श्री अश्विनी कुमार चोपड़ा के साथ बिताए गए मधुर संस्मरण भी सुनाए। पूर्व निगम पार्षद यशपाल आर्य ने समाजसेवी संघ अधिकारी रमेश प्रकाश शर्मा, आशा शर्मा के साथ बिताए गए अनुभव शेयर किए तथा वरिष्ठ नागरिकों की विशेष सेवाओं हेतु किरण चोपड़ा को ढ़ेर सारी बधाइयां दी। सतीश चड्ढा ने कार्यक्रम का संचालन किया। ***-चन्द्र मोहन आर्य, पत्रकार***

आर्य वीर दल कीर्ति नगर ने मनाया 25वां स्थापना दिवस

दिनांक 7 जुलाई, 2022 को आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की योगिराज श्रीकृष्ण महाराज शाखा आर्य वीर दल कीर्ति नगर ने 25वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर आर्यसमाज कीर्ति नगर में सभी आर्यवीरों ने सामूहिक यज्ञ किया एवं आर्यसमाज के अधिकारियों ने सभी उपस्थित आर्यवीरों को उद्बोधन एवं आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर आर्यसमाज की सेवा करने वाले विशिष्ट आर्यवीरों को सम्मानित भी किया गया।

दिल्ली में नशे के विरुद्ध आर्यसमाज के जागरुकता अभियान के छः वर्ष पूर्ण

'मशाल' के माध्यम से सेवा बस्तियों एवं जे.जे. कलस्टर कालोनियों में चलाया जाता है अभियान

दिल्ली की सेवा बस्तियों एवं जे.जे. कलस्टर क्षेत्रों में आर्यसमाज द्वारा बच्चों, युवाओं, महिलाओं और लोगों को नशे की प्रवृत्ति से बचाने केलिए जन-जागरूकता अभियान संचालित कर रहा है। आर्यसमाज इन सेवा बस्तियों में जहां नशे के विरुद्ध जागरूकता अभियान चलाने और देश के युवाओं में राष्ट्र प्रेम पैदा करने के लिए 'मशाल' कार्य प्रज्वलित हो रहा है, वहां आर्यसमाज आज की युवा पीढ़ी और बच्चों को अपनी वैदिक संस्कृति के जड़ों से जोड़े रखने के लिए घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ, गरीब और दलित समाज को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए हवन उत्थान जनकल्याण समिति और रोजगार प्रदान करने के लिए महिला स्वरोजगार, महिला स्वाबलम्बन और सहयोग के माध्यम से सभी महिला, पुरुषों, बच्चों के लिए वस्त्र, पुस्तकों तथा खिलौनों के वितरण का कार्य किया जा रहा है।

गत दिनों 7 जुलाई को आर्यसमाज के इस अभियान मशाल ने छह वर्ष पूर्ण किए। वर्ष 2016 में इस अभियान को आरम्भ किया गया था, जिसका उद्देश देश के युवाओं में राष्ट्रभक्ति के भाव को पैदा करना तथा उन्हें नशे की प्रवृति से दूर रखना और जन समान्य में नशे के विरुद्ध अभियान चलाना है।

2016 की मशाल और आज 2022 की मशाल में अत्यधिक परिवर्तन आ चुके हैं। पहले मशाल उद्घोष का शंखनाद था और आज उसके साथ रचनात्मक कार्यों से जीवन परिवर्तन की दिशा में भी कार्य कर रहा है। मशाल आज नशे में बुरी तरह से नष्ट सैकड़ों परिवारों के उत्थान के लिए क्रियाशील है।

कोरोना महामारी, लॉक डाउन के दो वर्ष एक बार फिर से नई ऊर्जा और जोश के साथ 10 जुलाई, 2022 को जवाहर कैम्प, कीर्ति नगर में मशाल का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहां यज्ञ के उपरान्त महिलाओं और पुरुषों के समक्ष मशाल का कार्यक्रम रखा व स्थानीय महिलाओं ने अपने परिवार में नशे की समस्या को भी वहाँ खुलकर रखा।

17 जुलाई को कठपुतली कालोनी, आनन्द पर्वत दिल्ली में जैसे ही हमारी गाड़ी इन बस्तियों में घुसी तो छोटे छोटे बच्चे हमारी गाड़ी के साथ पीछे पीछे दौड़ने लगे और कहने लगे कि 'आप नशे छुड़ाने वाले हो ना?' हम आश्चर्यचकित थे क्योंकि आज से पहले कभी भी हम इस स्थान पर नहीं आए थे और न ही हमारी गाड़ी पर कुछ ऐसा लिखा हुआ था कि हम नशे छुड़ाने वाले हैं। हमने जब स्थानीय लोगों से पूछा तो पता चला कि "यहाँ हर घर में नशा है और जब से सरकार कि मेहरबानी हुइ है तो तब से ये छोटे छोटे बच्चों को इसमें डुबा रहा है।"

हम बयां भी नहीं कर सकते हैं कि हमारे भविष्य को किस तरह बर्बाद और तबाह किया जा रहा है। यदि हम समय रहते ना संभले तो हमारा युवा अपने पैर पर खड़े होने की स्थिति में नहीं रहने वाला।

मशाल के कार्यक्रमों को आयोजित करने में सभा के अन्य प्रकल्पों - घर-घर यज्ञ, सहयोग, हवन उत्थान जनकल्याण समिति के कार्यकर्ताओं का हमें विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है, हम उन सबका आभार व्यक्त करते हैं।

- ***संयोजक***

जवाहर कैम्प, कीर्ति नगर एवं कठपुतली कालोनी, आनन्द पर्वत दिल्ली आयोजित मशाल के कार्यक्रमों उपस्थित स्थानीय महिलाएं, पुरुष एवं बच्चे

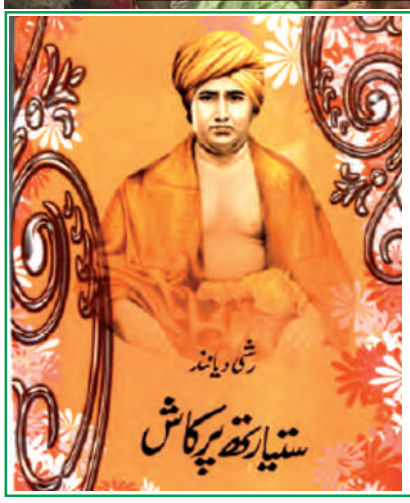

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

महर्षि दयानन्दकृत

सत्यार्थ प्रकाश

उर्दू भाषा में अनुवाद)

मूल्य मात्र 100/- रुपये

amazon

पर भी उपलब्ध

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)

सम्पर्क : 011-23360150, 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत
वैदिक उपदेशक एवं भजनोपदेशक परिचय पुस्तिका का प्रकाशन

आपको जानकर हर्ष होगा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत के समस्त वैदिक उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों की परिचय पुस्तिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस पुस्तक में आर्यजगत के समस्त उपदेशक एवं भजनोपदेशक महानुभावों के नाम, पते, सम्पर्क सूत्र, संक्षिप्त जीवन परिचय फोटो के साथ प्रकाशित किया जाना सुनिश्चित किया है।

अतः समस्त उपदेशक/भजनोपदेशक महानुभावों से निवेदन है कि अपना संक्षिप्त जीवन परिचय - अपने जीवन, उपयोगी कार्य, परिवार, शैक्षिक योग्यता/प्रचार क्षेत्र व प्रमुख उपलब्धियों के विवरण के साथ भेजें, जिससे उन्हें पुस्तक में उचित स्थान दिया जा सके। कृपया अपना विवरण **'सम्पादक, वैदिक उपदेशक/भजनोपदेशक विरणिका'** के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर प्रेषित करें। - ***महामन्त्री***

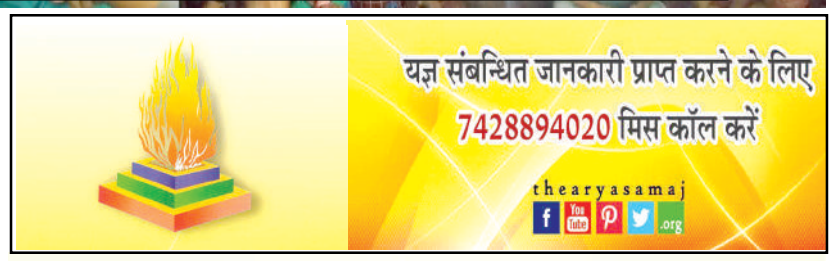

Chapter - 4 to7

Janeu or Holy Thread Worn Across the Chest by Hindu Males (Yagyopavita)

Part- 1

Yagyopavita or upanayana sanskara is one of the sixteen traditional sanskaras that marks the acceptance by a guru or teacher of a student's entry into a school in Hinduism. The janeu is a sacred thread or cord received as a rite of passage by a student who goes to study under a guru. Traditionally upanayana is performed when a boy reaches the age of seven years and two months (a total of eight years, including the ten months spent in the mother's womb) and as recommended by Swami Dayanand in his book, Sanskaravidhi. Yagyopavita is a thread which is worn around the neck and one hand diagonally across the chest. The word yagyopavita means drawing closer to the yagya. Arya Samaj gives great importance to this practice as it is associated with education of life. It means that the boy is given a huge responsibility towards his parents, teachers and the society at large. The thread reminds him day in and day out of his commitment to them. This responsibility continues during his student (Brahmcharya) life as well as after marriage (grihastya) and vanaprastha stages of life, Only during sanyasa that he is freed from this debt to all his elders. The major difference in the belief of Arya Samajis is that unlike others, they give the right to wear the yagyopavita to everyone, irrespective of whether he is born as a Brahmin, Kshatriya, Vaishya or a Shudra and irrespective of his gender too. There are references to Hindu women wearing the janeu round their neck like a necklace instead of on their shoulder and torso, unlike their male counterparts. Hindu Brahmins had spread a belief that this was the right of every Brahmin only, irrespective of his being a student or not while others, in spite of being excellent students and being born in families of Kshatriya, Vaishya or Shudra were deprived of this sanskara. Arya Samaj opposed this thought process tooth and nail. Sandhya Arya Samajis perform prayers and worship to God by reciting the mantras from the Vedas. Each handpicked mantra s full of deep meaning and atreasure-house of great thoughts. The process of worship by reciting this select set of mantras is called sandhya. The contents of the mantras during the sandhya include the power of God to create and destroy the world, thus reminding mankind to desist from harbouring false pride and wrong notions . There is a prayer to God asking Him to encourage man to harbour noble thoughts so that he performs only noble deeds. The process of pranayama (breathing exercises) also constitute a part of the sandhya, which is concluded by making a profound thanksgiving to God through chanting of special mantras and singing of bhajans (devotional songs). Arya Samaj recommends the sandhya to be performed twice in a day, once in the morning and once in the evening . Sanskara Sanskara is the name given to a set of rituals which are to be performed by every human being and as recommended by Swami Dayananda Saraswati in his book, Sanskaravidhi. Every ritual has a great impact on the whole family in different ways. A systematic and uniform ritual to be performed on every occasion disciplines human life. Arya Samajis follow sixteen sanskaras as suggested by Swami Dayananda and cover different periods of his life, right before birth till death.

The names and descriptions of the sixteen sanskaras are as follows : **Garbhadhana :** Garbha means womb and dhana means attain, wealth and literally implies ' attaining the wealth of the womb. It is a science of creating spiritual offspring with a pure conscience. Conception or an outcome of sexual impulse, thus completing the motive of solemnising a marriage. This sanskara, for the fulfilment of one's parental obligations and a continuation of the human race, is performed after marriage and before the conception of a child. Before nisheka (conception), this ritual is conducted by the priest and marks the intent of the parents to be blessed with a healthy and normal child, who would bring new joy in their home. **Punsavana :** This literally means 'quickening a being , soul or bringing forth a male or a female baby. The rite of passage is celebrated in the third or fourth month of pregnancy, typically after the pregnancy begins to show but before the baby begins to move in the womb. The ritual is performed with the wife being fed a paste of a mixture of yoghurt, milk and ghee (clarified butter) by her husband **Simantonnayana :** This sanskara literally means parting the hair and is performed during the seventh month of pregnancy. The ritual is performed in the last trimester of pregnancy to wish for safe delivery and is similar to a baby shower. After the ritual and until the birth of the baby, the woman is expected to avoid overexertion Relatives offer prayers to the Almighty for mental growth of the child.

-: With thanks :-
"The Beliefs of Arya Samaj"
by shri Mahendra Arya

प्रेरक प्रसंग

मधुर याद तेरी सताती रहेगी

आर्यसमाज के आरम्भिक युग में आर्यसमाज के युवक दिन-रात वेद-प्रचार की ही सोचते थे। समाज के सब कार्य अपने हाथों से करते थे। झाड़ू लगाना और दरियाँ बिछाना बड़ा श्रेष्ठ कार्य माना जाता था। तब खिंच-खिंचकर युवक समाज में आते थे। रायकोट जिला लुधियाना (पंजाब) में एक अध्यापक मथुरादास था। उसने अध्यापन कार्य छोड़ दिया। आर्यसमाज के प्रचार में दिन-रैन लगा रहता था। बहुत अच्छा वक्ता था। जो उसे एक बार सुन लेता बार-बार मथुरादास को सुनने के लिए उत्सुक रहता।

मित्र उसे आराम करने को कहते, परन्तु वह किसी की भी न सुनता था। ग्रामों में प्रचार की उसे विशेष लग्न थी। सारी-सारी रात बातचीत करते-करते आर्यसमाज का सन्देश सुनाने में जुटा रहता। अपने प्रचार की सूचना आप ही दे देता था। खाने-पाने का लोभ उसे छू न सका। रूखा-सूखा जो मिल गया सो खा लिया। प्रान्त की सभा अवकाश पर भेजे तो अवकाश लेता ही न था।

रूग्ण होते हुए भी प्रचार अवश्य करता। ज्वर हो गया। उसने चिन्ता न की। ज्वर क्षयरोग बन गया। उसे रायकोट जाना पड़ा। वहाँ इस अवस्था में भी कुछ समय निकालकर प्रचार कर आता। नगर के लोग उसे एक नर-रत्न मानते थे। लम्बी-लम्बी यात्राएँ करके, भूखे-प्यासे रहकर, दु:ख-कष्ट झेलते हुए उसने हँस-हँसकर अपनी जवानी ऋषि की राह में वार दी।

ऐसे कितने नींव के पत्थर हैं जिन्हें हम आज कतई भूल चुके हैं। अन्तिम वेला में भी मथुरादासजी के पास जो कोई जाता, वह उनसे आसमाज के कार्य के बारे में ही पूछते। अपनी तो चिन्ता थी ही नहीं।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्योद्देशयरत्नमाला पद्यानुवाद

जन्म-मरण

१२-जन्म
मिल शरीर से जीव
जो होता कर्म-समर्थ ।
उसको कहते 'जन्म' हैं,
पडिण्त शास्त्र-समर्थ ।।17।।

१३-मरण
जो संयुक्त शरीर से
होता जीव-वियोग ।
'मरण' उसी को कह रहा
विद्वज्जन-आयोग ।।18।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मंगोलपुरी
ओ-253, मंगालपुरी, नई दिल्ली-83
प्रधान : श्री हरिओम शास्त्री
मन्त्री : श्री ओमदत्त आर्य
कोषाध्यक्ष : श्रीमती मनोज कुमारी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा/ आर्यसमाज दिल्ली से सम्बन्धित नवीनतम सूचनाओं व जानकारियों हेतु जुड़ें व्हाट्सएप्प पर और साझा करें विचार

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अत: दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग, सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये मात्र।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

नि:शुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरण योजना

आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर करें गति प्रदान

मानव समाज को सन्मार्ग दिखाने वाले महर्षि देव दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश उनकी विशेष रचनाओं में से एक प्रमुख रचना है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर लाखों लोगों के जीवन प्रकाशित हुए हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प धारण किया हुआ है। इस लोकोपकारी कार्य के लिए सभा ने स्थाई निधि की योजना बनाई है। जिसके ब्याज से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश लगातार विश्व की संस्थाओं में भेजे जाते हैं। सभा के प्रयास और आप सबके सहयोग से सत्यार्थ प्रकाश भारत के समस्त महत्वपूर्ण संस्थानों में, पुस्तकालयों में तथा सभी दूतावासों में, स्कूल-कालेजों में लगातार पहुंचाए जा रहे हैं। इस महान कार्य में हमें निरंतर सफलता मिल रही है।

सभा का प्रयास है कि सत्यार्थ प्रकाश भारत के 135 करोड़ नागरिकों के हाथों में पहुंचे तथा विश्व के 700 करोड़ से ज्यादा लोगों के जीवन स्वामी दयानंद जी की इस अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश से प्रकाशित हों। आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर गति प्रदान करें।

- ⋆ इसके लिए आप अपने आर्यसमाज की ओर से या संस्था की ओर से अथवा अपने परिवार की ओर से, अपने बड़े-बुजुर्गों के जन्मदिवस/स्मृति में एक स्थाई निधि बनवाएं। जिससे लगातार यह सेवा कार्य चलता रहे।
- ⋆ अपने बच्चों के जन्मदिन पर, विवाह की वर्षगांठ पर स्वजनों को भेंट करें और सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में सहयोग करें।
- ⋆ इस महान परोपकारी सेवा में कुछ-न-कुछ आर्थिक सहयोग अवश्य दें।

अधिक जानकारी के लिए अथवा सहयोग हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com

MDH हवन सामग्री

मात्र 90/- किलो 10 एवं 20 किलो की पैकिंग

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

शोक समाचार

श्री ललित चौधरी जी का निधन

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी, नई दिल्ली-18 के प्रधान श्री ललित चौधरी जी का दिनांक 18 जुलाई, 2022 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पंजाबी बाग शमशान भूमि पर किया गया। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं अन्य पदाधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारी एवं सदस्यों पहुंचकर उन्हें अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 20 जुलाई, 2022 को आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी में सम्पन्न हुई।

आचार्य श्री देवराज जी का निधन

आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा (उ.प्र.) के अधिष्ठाता आचार्य देवराज जी का दिनांक 15 जुलाई, 2022 की प्रात: गुरुकुल परिसर में ही निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 16 जुलाई को पूर्ण वैदिक रीति के साथ गुरुकुल में ही किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 25 जुलाई को आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा में आयोजित की जाएगी।

श्रीमती उषा भसीन जी का निधन

आर्यसमाज सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती उषा भसीन जी का दिनांक 17 जुलाई, 2022 को लगभग 83 वर्ष की आयु में अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 19 जुलाई, 2022 को सायं 4-5 बजे आर्यसमाज सफदरजंग एन्कलेव में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम एपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

पृष्ठ 2 का शेष

माथुर नाम के जिस जासूस को पकड़ा गया था वो तेहरान में कश्मीरी आतंकवादियों के नेटवर्क का भंडाफोड़ करने वाला था। वो अपने खुफिया इनपुट्स नियमित तौर पर भारत भेजता था और राजदूत के तौर पर इसकी जानकारी हामिद अंसारी के पास भी रहती थी। अब जो गुप्त जानकारी भारतीय जासूस माथुर के पास थी या दूतावास के पास वह जानकारी ईरान की खुफिया एजेंसी और पाकिस्तान की खुफियां एजेंसी के पास कैसे पहुँचती थी, किताब में ऐसे कई सवाल है। हालाँकि इस घटनाक्रम पर तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने तेजी से कार्रवाई की माथुर को वापस दिल्ली बुला लिया गया। दोनों जासूसों के इनपुट्स के आधार पर रॉ के एक सीनियर अफसर को जांच के लिए तेहरान भेजा गया। उसने रॉ के सचिव को सौंपी रिपोर्ट में बताया कि हामिद अंसारी का रवैया संदेहास्पद है।

सिर्फ यही नहीं इसके बाद भी कई बार ऐसे मौके आये और अंसारी की नियत पर सवाल खड़े हुए। 19 अगस्त 2017 तेहरान में अंसारी साहब की भूमिका को लेकर संडे गार्डियन में एक लम्बा-चौड़ा लेख छपा। 6 जुलाई, 2019 को भारत की खुफिया एजेंसी रॉ के पूर्व प्रमुखों सहित कई अधिकारियों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को चिट्ठी लिखकर मांग की थी कि ईरान में राजदूत के रूप में तैनाती के दौरान हामिद अंसारी की भारत विरोधी करतूतों की उच्च स्तरीय जांच कराई जाए।

हालाँकि किताब के अलावा भी हामिद अंसारी की भूमिका पर समय-समय सवाल उठते रहे हैं। दिल्ली दंगे और तमाम ऐसी साजिशों में शामिल एक अलगाववादी संगठन पीएफआई का जलसा 2017 में हुआ। तब उप राष्ट्रपति के तौर पर हामिद अंसारी ने इसमें शिरकत की। जबकि पीएफआई का असली रूप तमाम देश विरोधी गतिविधियों, जिहाद, कन्वर्जन और लव जिहाद के आरोप सामने आ रहा था। पर अंसारी जी उसमें गए। जब हंगामा हुआ, तो बोले कि मैं तो वहां सरकारी मेहमान की तरह गया था। यही नहीं 21 जून, 2015 को पूरी दुनिया में पहला योग दिवस मनाया गया। देश के प्रधानमंत्री से लेकर तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी तक राजपथ के कार्यक्रम में शामिल हुए। पर हमेशा की तरह अंसारी साहब राष्ट्रीय अवसर पर नदारद थे। उनके आवास तक पर कोई कार्यक्रम नहीं हुआ। यही नहीं साल 2015 का गणतंत्र दिवस था। अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा मुख्य अतिथि थे। लेकिन अंसारी ने अपना असली रंग दिखाया। तिरंगे को सैल्यूट नहीं किया। जब सवाल उठा, तो फिर बहाना। इस बार बहाना प्रोटोकाल का बनाया गया। इसके अलावा जब मद्रास हाईकोर्ट का फैसला वंदे मातरम को लेकर आया तो हामिद अंसारी का कहना था मैं इसे असुरक्षा की भावना कहूंगा।

इसके अलावा 2018 में एएमयू में जिन्ना का पोस्टर लगाने को लेकर विवाद हुआ। अंसारी साहब जिन्ना का पोस्टर लगाने के पक्ष में खड़े हो गए। शरिया अदालतों के बारे में भी हामिद अंसारी ने इन्हें सामाजिक प्रथाएं बताते हुए जायज करार दिया। यही नहीं गणतंत्र दिवस पर इंडियन अमेरिकन मुस्लिम काउंसिल की ओर से आयोजित एक वर्चुअल कार्यक्रम में पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी शामिल हुए थे। जबकि इस संस्था पर पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई से जुड़े होने का आरोप है। लेकिन अंसारी ना केवल इसमें शामिल हुए बल्कि इस कार्यक्रम में साहब ने भारत में असहिष्णुता और असुरक्षा की बात कहते हुए कहा कि मुसलमान डरे हुए हैं।

हालाँकि अब एक बार फिर से जब पाकिस्तानी पत्रकार मिर्जा का इन्टरव्यू सामने आया तो इस पर फिर से पूर्व रॉ ऑफिसर एन. के. सूद ने ट्वीट किया और अंसारी की भूमिका की जाँच की मांग कर डाली। उन्होंने लिखा, मैं ईरान के तेहरान में था और हामिद अंसारी वहां राजदूत थे। अंसारी ने तेहरान में रॉ के सेट-अप को एक्सपोज करके इसके अफसरों की जान खतरे में डालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी व्यक्ति को लगातार दो बार देश का उप-राष्ट्रपति बना दिया गया। ऐसे में सवाल उठे हैं कि सोचिए, जिस शख्स के बारे में देश की खुफ़िया एजेंसियाँ ही कह रही हैं कि उनके लिंक कट्टर इस्लामी समूहों से रहे हैं, जो देश के खिलाफ हैं, उस व्यक्ति ने 10 साल उप-राष्ट्रपति रहते हुए देश का कितना नुकसान किया होगा?

- सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650522778

E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 18 जुलाई, 2022 से रविवार 24 जुलाई, 2022

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 20-21-22/7/2022 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 जुलाई, 2022

रेलवे स्टेशनों पर भी खुलेंगे वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल

आर्यसमाज के युवा कार्यकर्ताओं को मिलेगा स्वरोजगार का अवसर

मिर्जापुर, फतेहपुर, अलीगढ़, झांसी, ग्वालियर, मथुरा, आगरा के निकटवर्ती क्षेत्रों के इच्छुक आर्य महानुभाव सम्पर्क करें

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रयासों से रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य के स्टाल बुक कराए गए हैं जिनके माध्यम से महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को तथा आर्य समाज के सिद्धान्त, मान्यता और और परम्पराओं को जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। नार्थ सेंट्रल रेलवे के **मिर्जापुर, फतेहपुर, अलीगढ़, वीरांगना लक्ष्मीबाई जंक्शन झांसी, ग्वालियर, मथुरा, आगरा फोर्ट तथा आगरा कैंट** के कुल 10 प्लेटफार्मों पर वैदिक साहित्य बिक्री केन्द्र (बुक स्टाल) खोलने की स्वीकृति प्राप्त हो गयी है।

सहयोग की अपील - उपरोक्त सभी रेलवे स्टेशनों पर स्टाल निर्माण के लिए आर्थिक सहयोग की विशेष आवश्यकता है। एक स्टाल निर्माण पर लगभग 150000/- (एक लाख पचास हजार रुपये) का व्यय होगा। जो आर्यसमाजें/दानी महानुभाव/संस्थाएं/ट्रस्ट स्टाल निर्माण में सहयोग देंगे उनके नाम स्टाल पर अंकित किया जाएगा। स्थानीय आर्यसमाजों का स्टाल निर्माण में विशेष सहयोग अपेक्षित है।

स्वरोजगार हेतु - उपरोक्त रेलवे स्टेशनों पर वैदिक साहित्य स्टाल चलाने के इच्छुक आर्य युवा कार्यकर्ता/आर्यवीर 9313013123/9540041414 पर श्री सतीश चड्डा से सम्पर्क करें। - *महामन्त्री*

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनाओं के लिए सहयोग/दान अब और भी आसान: QR कोड स्कैन करते ही होगा भुगतान

आपको जानकर हर्ष होगा कि बैंक द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को डिजिटल पेमेंट हेतु कोड़ जारी किया गया है। अब आप किसी भी पेमेंट माध्यम - पेटीएम, फोन पे, गूगल पे, मास्टर/वीजा रुपये, भीम पे - से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किसी भी योजना/प्रकल्प के लिए सहयोग एवं दान राशि का भुगतान केवल मात्र क्यू.आर. कोड को स्कैन करके कभी भी-कहीं से भी कर सकते हैं।

आप इस कोड के माध्यम अपने आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियों का भी भुगतान कर सकते हैं।

आप द्वारा इसके माध्यम से भेजी गई राशि तत्काल सभा को प्राप्त हो जाएगी। कृपया भुगतान करते ही आपके पास जो मैसेज आए उसका स्क्रीन शॉट लेकर अथवा सीधे उस मैसेज को 9540040388 पर व्हाट्एप्प अथवा टेलिग्राम कर दें, जिससे आपको तुरन्त रसीद जारी की जा सके।

- विनय आर्य, महामन्त्री
(9958174441)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह